राष्ट्रीय सेवा योजना

विद्यार्थियों के लिए राष्ट्रीय सेवा योजना का चिंतन महात्मा गांधी व स्वामी विवेकानन्द के विचारों से अनुप्राणित है। महात्मा गांधी का चिन्तन था कि यदि देश का शिक्षित युवा वर्ग अपनी शिक्षा प्राप्त करने की प्रक्रिया के साथ–साथ समाज सेवा के भी कार्य करें तो प्रत्येक देशवासी एक दूसरे की समस्याओं से अवगत होते हुए अटूट बंधन में बंध जायेंगे। उनका मत था कि छात्र जीवन न केवल बौद्धिक विकास का समय है बल्कि भावी जीवन के निर्माण का भी समय है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के तत्काल बाद ही ऐसी किसी योजना के लागू किये जाने की संभावना पर विचार प्रारम्भ हो गया जिससे छात्रों में राष्ट्रीय सेवा योजना के प्रति समर्पण तथा सहानुभूति के भाव उत्पन्न हो सकें तथा उनकी ऊर्जा का उपयोग समाजोपयोगी कार्यक्रमों में हो सके। सर्वप्रथम, प्रथम शिक्षा आयोग ने सन् 1950 में छात्रों द्वारा स्वेच्छा से राष्ट्र सेवा की संस्तुति की थी। सन् 1958 में प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू द्वारा राज्यों के मुख्यमंत्रियों को इस उद्देश्य से लिखे पत्र, 1959 में डा. सी.डी. देशमुख की अध्यक्षता में गठित समिति की सिफारिशें, सन् 1966 में कोठारी आयोग की संस्तुति, 1967 में राज्यों के शिक्षा मंत्रियों की बैठक तथा 1967 में ही उप–कुलपतियों की बैठक एवं 1969 में शिक्षा मंत्रालय व विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा संचालित उच्च शिक्षा संस्थानों के प्रतिनिधियों की बैठक जैसे चरणों से होते हुए अंततः 24 सितम्बर 1969 को गांधी शताब्दी वर्ष में राष्ट्रीय सेवा योजना देश के 37 विश्वविद्यालयों में 40000 छात्र संख्या के साथ प्रारम्भ हुयी थी।

छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय में विश्वविद्यालय कैम्पस सहित कुल 69 महाविद्यालयों में योजना का संचालन किया जा रहा है। इस योजना के माध्यम से छात्र एवं छात्राओं को विभिन्न राष्ट्रीय एवं सामाजिक गतिविधियों में भाग ले रहे हैं।

सिद्धान्त वाक्य (NSS-Moto)

'मै नहीं आप' **NOT ME BUT YOU**' रा.से.यो. का सिद्धान्त वाक्य है। मैं नहीं आप प्रजातांत्रिक ढंग से रहने का सार बताता है तथा निःस्वार्थ सेवा की आवश्यकता का समर्थन करता है।

प्रतीक चिन्ह

राष्ट्रीय सेवा योजना का प्रतीक चिन्ह उड़ीसा के कोणार्क के सूर्य मन्दिर के रथ चक्र पर आधारित है। सूर्य मन्दिर के ये विशाल चक्र सृजन, संरक्षण और निर्मूक्ति के आवर्तन को अभिव्यक्त करते हैं तथा काल और स्थान से परे जीवन में गति का महत्व बताते हैं। प्रतीक का अभिकल्प सूर्य रथ के चक्र का सरलीकृत रूप है जो मुख्यतः गति को दर्शाता है। चक्र जीवन के प्रगतिशील चक्र को व्यक्त करता है। यह निरन्तरता का और साथ ही परिवर्तन का भी प्रतीक है और रा.से.यो. को समाज में परिवर्तन लाने और उसे व्यक्त करने के लिए निरन्तर आगे बढ़ने के लिए प्रयास करने का द्योतक है।

बैज (NSS-Badge)

रा.से.यो. का प्रतीक चिन्ह रा.से.यो. को बैज पर उत्कीर्ण है। रा.से.यो. के स्वयंसेवक समाज की सेवा के विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लेते हुए उसे लगाते हैं। कोणार्कक के सूर्य मन्दिर के रथ में 24 पहिये है जो सम्पूर्ण दिन के 24 घण्टों का प्रतिनिधित्व करते हैं। प्रत्येक पहिये में 8 तीलियाँ हैं जो 8 प्रहर दर्शाती है। इसलिये जो व्यक्ति इस बैज को धारण करता है उसे यह बैज याद दिलाता है कि वह राष्ट्र सेवा के लिये दिन–रात अर्थात 24 घण्टे (आठों पहन) तत्पर रहे। बैज मे जो लाल रंग है वह रक्त का प्रतीक है, जो इस बात का संकेत करता है कि रा.से.यो. के स्वयं सेवकों में पूरा उत्साह है और वे जीवन्त है, सक्रिय हैं और उनमें स्फूर्ति है। गहरी नीला रंग उस ब्रह्माण्ड की ओर संकेत करता है जिसका रा.से.यो. एक छोटा सा अंश है और जो मानव मात्र का कल्याण करने के लिए अपना अंशदान करने को तैयार है। सफेद रंग शांति का द्योतक है जिसका अर्थ है राष्ट्रीय सेवा योजना का स्वयंसेवक बिना विवाद किये अपने कार्य में सदैव तत्पर्य रहता है।

राष्ट्रीय सेवा योजना का उद्देश्य

मुख्य उद्देश्य

'सामुदायिक सेवा के माध्यम से विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का विकास'

सहायक उद्देश्य

1. लोगों के साथ मिलकर कार्य करना।
2. स्वयं को रचनात्मक सामाजिक एवं सृजनात्मक कार्यों में प्रवृत्त करना।
3. स्वयं तथा समुदाय की ज्ञान वृद्धि करना।
4. समस्याओं को हल करने में स्वयं की प्रतिभा का व्यावहारिक उपयोग करना।
5. प्रजातांत्रिक नेतृत्व को क्रियान्वित करने में दक्षता प्रदान करना।
6. स्वयं को रोजगार योग्य बनाने के लिये कार्यक्रम विकास में दक्षता प्रदान करना।
7. शिक्षित और अशिक्षितों के बीच की दूरी को मिटाना।
8. समुदाय के कमजोर वर्ग की सेवा के लिये स्वयं में इच्छा जाग्रत करना।

राष्ट्रीय सेवा योजना के अन्तर्गत मनाये जाने वाले प्रमुख दिवस एवं कार्यक्रम

1. वन महोत्सव सप्ताह	1 जुलाई से 7 जुलाई तक	पौधरोपण / जागरूकता
2. स्वतंत्रता दिवस	15 अगस्त	गोष्ठी
3. सद्भावना दिवस	20 अगस्त	पौधरोपण / गोष्ठी

4. शिक्षक दिवस	5 सितम्बर	पौधरोपण / गोष्ठी
5. अन्तर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस	8 सितम्बर	साक्षरता रैली
6. रा.से.यो. दिवस	24 सितम्बर	गोष्ठी, रैली
7. राष्ट्रीय रक्तदान दिवस	1 अक्टूबर	रक्त परीक्षण / रक्तदान
8. गाँधी जयन्ती	2 अक्टूर	कैम्पस स्वच्छता एवं गोष्ठी
9. यातायात नियंत्रण दिवस	24 अक्टूबर	गोष्ठी, जागरूकता रैली
10. बचत दिवस / राष्ट्रीय एकता दिवस	31 अक्टूबर	गोष्ठी
11. बाल दिवस	14 नवम्बर	स्वास्थ्य मेला एवं विभिन्न शैक्षिक प्रतियोगिताएं
12. राष्ट्रीय एकीकरण दिवस	19 नवम्बर	विचारगोष्ठी, श्रमदान
13. कौमी एकता पखवारा	10 नव. से 25 नव.	गोष्ठी, निबन्ध प्रतियोगिता, पोस्टर, नाटक, सामुदायिक कार्यक्रम
14. एड्स दिवस	1 दिसम्बर	रैली, गोष्ठी
15. मानवाधिकार दिवस	10 दिसम्बर	रैली, गोष्ठी
16. विवेकानन्द जयन्ती	12 जनवरी	निबन्ध पोस्टर प्रतियोगिता
17. राष्ट्रीय युवा सप्ताह	12 से 19 जन.	सेमीनार, नाटक, निबंध, पोस्टर प्रतियोगिता
18. गणतंत्र दिवस	26 जनवरी	परेड, झाँकी

राष्ट्रीय सेवा योजना गीत

लक्ष्य गीत

उठें समाज के लिए उठे-उठें
जगें स्वराष्ट्र के लिए जगें-जगें
स्वयं सजें, वसुन्धरा संवार दें-२
हम उठें, उठेगा जग हमारे संग साथियों
हम बढ़े तो सब बढ़ेंगें अपने साथ साथियों
जमीं पे आसमान को उतार दें-२
स्वयं सजे वसुन्धरा संवार दें-२
उठें समाज के लिए उठे-उठें
जगें स्वराष्ट्र के लिए जगें-जगें
उदासियों को दूर कर खुशी को बांटते चलें
गांव और शहर की दूरियों को पाटते चलें
ज्ञान को प्रचार दें प्रसार दें
विज्ञान को प्रचार दें प्रसार दें
स्वयं सजे वसुन्धरा संवार दें-२
उठें समाज के लिए उठे-उठें
जगें स्वराष्ट्र के लिए जगें-जगें
समर्थ बाल वृद्ध और नारियां रहें सदा
हरे भरे वनों की शाल ओढ़ती रहे धरा
तरक्कियों की एक नई कतार दें-२
स्वयं सजे वसुन्धरा संवार दें-२
उठें समाज के लिए उठे-उठें
जगें स्वराष्ट्र के लिए जगें-जगें
ये जाति धर्म बोलियां बने न शूल राह की
बढ़ाए बेल प्रेम की अखण्डता की चाह की
भावना से ये चमन निखार दें
सद्‌भावना से ये चमन निखार दें-२
स्वयं सजे वसुन्धरा संवार दें-२
उठे समाज के लिए उठें-उठें
जगे स्वराष्ट्र के लिए जगें-जगें
स्वयं सजे वसुन्धरा संवार दें-२